श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड़, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ जुलाई - 2022

ऐनरोलमेन्ट नंबर ____ 2 शहर ____

विद्यार्थी का नाम ____

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	राज लोक
(२)	सर्वभक्षी
(३)	त्याग
(४)	ऋषभसेन
(५)	वचन गुप्ति
(६)	भोग
(७)	संतोष
(८)	जीव विचार
(९)	अभिनिवेश
(१०)	तामसिक
(११)	क्षीरसमुद्र
(१२)	अपर्याप्ति
(१३)	वायुकाय
(१४)	ओम (ॐ)
(१५)	वीर्यांतराय
(१६)	आहे
(१७)	अपमार्ग
(१८)	ज्ञान
(१९)	भिक्षाटन
(२०)	अदत्तादान

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	अजीर्ण
(२)	मान
(३)	चारित्राचार
(४)	आहार
(५)	माता-पिता
(६)	नव-तत्त्व
(७)	निंद्य
(८)	मार्गानुसारी
(९)	जयणा
(१०)	क्रोध
(११)	बाहुबली
(१२)	सर्वज्ञकथित शास्त्र
(१३)	बाहुबली
(१४)	मुर्दे मुर्दे
(१५)	महावीर स्वामी

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	ज्वालाएं
(२)	श्वासोच्छ्वास
(३)	गुमान
(४)	पर्याप्त
(५)	कोंपले
(६)	मस्तक से
(७)	तप
(८)	प्रत्येक
(९)	मन
(१०)	उद्भ्रामक
(११)	धारण करना
(१२)	शक्ति अनुसार
(१३)	चरित्र
(१४)	उल्लसित
(१५)	एकेन्द्रिय
(१६)	जीवस्थान
(१७)	असंज्ञी
(१८)	कुक्कुरमुत्ता
(१९)	निपुण
(२०)	उत्तम चारित्र

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	६	(६)	१
(२)	७	(७)	४
(३)	९	(८)	१०
(४)	२	(९)	३
(५)	८	(१०)	५

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	२६
(२)	६
(३)	१०
(४)	८
(५)	२१
(६)	७
(७)	४८
(८)	३
(९)	११
(१०)	१०८

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	७
(२)	×	(२)	१८
(३)	×	(३)	१४
(४)	✓	(४)	१०
(५)	✓	(५)	६
(६)	✓	(६)	११
(७)	×	(७)	२१
(८)	✓	(८)	८
(९)	×	(९)	२
(१०)	×	(१०)	९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____ जांचनेवाले की सही ____

प्रश्न - ८

१. जीव विचार के अध्ययन के द्वारा ही हमे पता चला की पृथ्वीकाय, अपकाय अग्निकाय और वायुकाय मे जो असंख्य जीव है उनकी कैसे जयणा कर सकते है! और अभयदान जीवो को दे सकते है, हमारे सुख के लिए अनेका अनेक जीवो की विराधना से कैसे बचा जा सकता है। इस से हमे स्वंय के सुख की अलावा दुसरो के सुख का भी ख्याल आता है थोडी सी तकलीफ सहन करने से यदी असंख्य जीवो को अभयदान मिलता है। तो ऐसी जीवदया हमें निश्चीत ही करनी है!

२. जैन ध्वज :- भगवान महावीर स्वामी के २५००वे जन्मदिवस के समय जैन धर्म के सभी संप्रदायो ने मिलकर जैन ध्वज को मान्यता दी यह पंचपरमेष्ठि के पाँच रंगो से निर्मित है पहला सफेद रंग अरिहंतो का लाल और केसरिया रंग सिद्धो और आचार्यो का हरा रंग उपाध्यायो का और नीला रंग साधु को दर्शाता है। बीच मे स्वस्तिक चारो गतियो को बताता है! जैन ध्वज का बहुमान मतलब पंच परमेष्ठि का सम्मान करना है।

३. निंदा त्याग :- आज के समय मे हमारा ज्यादा समय लोगो की बुराई करने मे व्यस्त जाता है! कौन क्या कर रहा है क्यो कर रहा है। हमे नही पता लेकिन अपने दिमाग से जोड़ कर ही अच्छे कार्य को भी बुरा बता देते है! क्योकी हमे बहुत मजा आता है किसी के बारे मे बुरा (निंदा) करने मे। हम जानते है निंदा नही करना चाहिए इससे हम अपने कर्मो को बांधते है! अपनी जीभ को अपवित्र बनाते है। इसलिए निंदा नही करना चाहिए हमारा ज्यादा समय प्रभु की स्तवना करने मे गुरूजनो और सज्जनो की प्रंशसा करने मे लगाना चाहिए ना की निंदा करके कर्म बांधना चाहिए

४. सुपात्र दान की विधि :- हमे दान देने के नियमो की जानकारी होनी चाहिए! प्रभु के पारणे के समय लोगो को पता नही था इस लिए वह प्रभु को अनेका अनेक भेंट दे रहे थे बस आहार पानी के लिए प्रभु से मना कर रहे थे। श्रेयांस कुमार की जातिस्मरण से जान कर प्रभु को विनती कर इक्षुरस से प्रभु का पारणा कराया उस समय देवताओ द्वारा दिव्य वृष्टि की गई!

५. ब्रम्हचर्य की वाड :- ब्रम्हचर्य की नौ वाड है! जहा पर स्त्री पुरष हो वहा नही रहना, स्त्रीयो से रंग संबंधी बात नही करना, स्त्री जिस आसन पर बैठे है तो वह दो घडी तक उस आसन पर नही बैठ सकते! बुरी/या गलत नजरो से नही देखना। जहा स्त्री पुरष का कमरा हो उसके पास वाले कमरे मे भी नही रहना चाहिए अपने जीवन मे पहले की गई कामक्रिया के बारे विचार नही करना। मादक रसो का उपयोग नही करना। भूख से ज्यादा व स्वाद वाला भोजन नही करना, शरिर को कभी भी सजाना सवारना न